अजायब बानी

मासिक पत्रिका

दिसम्बर-2021

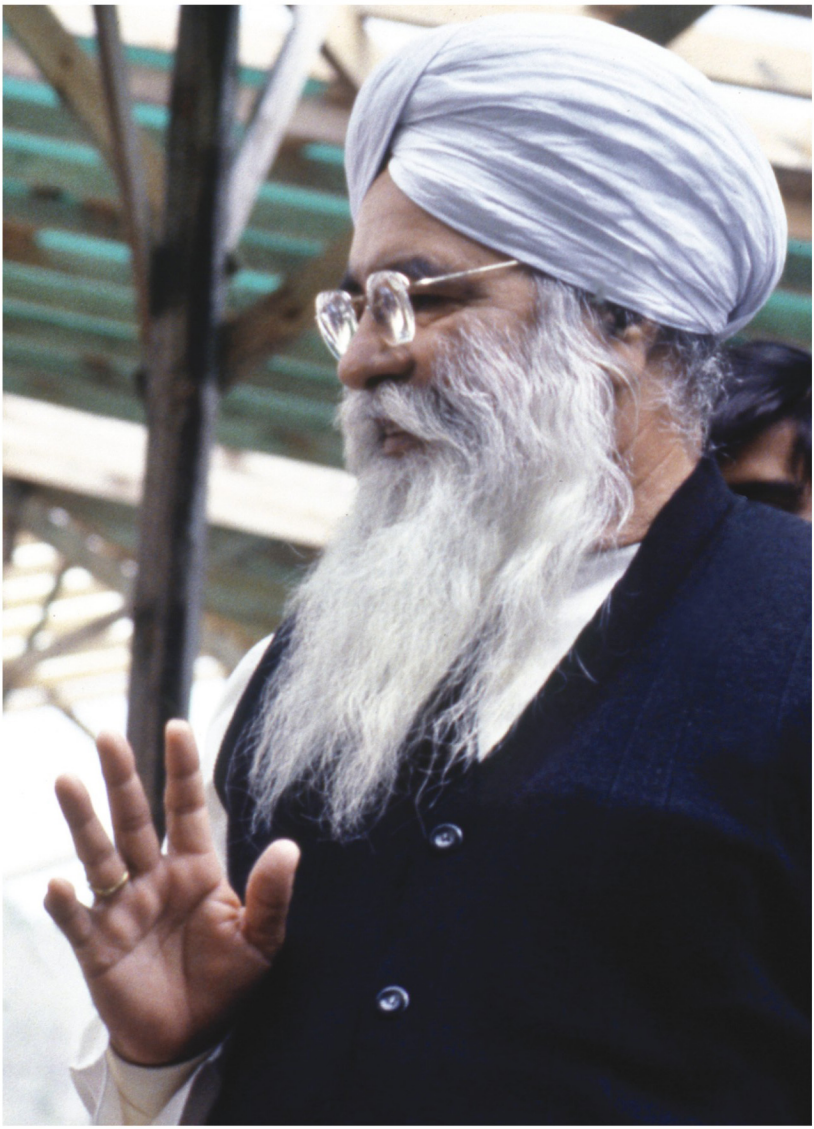

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां अंक–आठवां दिसम्बर–2021

3 मन हीं हमारा दुश्मन है

13 सन्तों का अभ्यास

21 भजन गाने से पहले

25 नाई की कहानी

27 रूहानियत

32 विदाई संदेश

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 237 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

27 सितम्बर 1988

मन ही हमारा दुश्मन है

DVD - 542(5) हुजूर स्वामी जी महाराज की बानी 16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

हाँ भई! आपके आगे स्वामी जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है। हमारे आगे दो रास्ते हैं, एक मन मार्ग है और दूसरा गुरु मार्ग है। एक सड़क ऊपर के रूहानी मंडलों में जाती है और दूसरी सड़क निचले मंडलों को जाती है। रास्ता हमने चुनना है कि हमने मन के रास्ते पर चलना है या गुरु के कहे रास्ते पर चलना है?

सन्त हमें बताते हैं कि हमारे और परमात्मा के दरम्यान मन ही रूकावट है। दुनिया के अंदर हमारा कोई शत्रु नहीं, शत्रु हमारा मन है जो हमारे अंदर ही बैठा है। कौमों–मजहबों की लड़ाई भी मन ही करवाता है। दूसरे मुल्क पर चढ़ाई करवाने वाला भी मन ही है क्योंकि मन ही हमारे अंदर लालच, तृष्णा को पैदा करता है, उसकी पूर्ति करने के लिए हम लड़ाई झगड़े करते हैं। मन पति–पत्नी को लड़वा देता है, भाई–भाई का सिर गाजर–मूली की तरह कर देता है।

शिष्य गुरु का हुक्म मानने के लिए तैयार होता है लेकिन मन आगे रूकावट बनकर खड़ा हो जाता है। हम भजन–सिमरन करके मन से ऊपर नहीं उठते बल्कि मन के दास बने रहते हैं। **मन ही हमारा दुश्मन है** इसलिए मन गुरु का हुक्म मानने नहीं देता, इंकार करता रहता है।

बच्चों की किताब में से महाराज सावन सिंह जी एक कहानी सुनाया करते थे कि रेलवे का काँटे वाला एक मुलाजिम लाईन पर काम कर रहा था। वहाँ उसके दो बच्चे लाईन पर खेल रहे थे उधर से ट्रेन आ रही थी तो उसने बहुत जल्दी बच्चों को हुक्म दिया, ''धरती पर लेट जाओ।'' एक बच्चा तो धरती पर लेट गया वह बच गया और दूसरे बच्चे ने कहना

नहीं माना वह ट्रेन के नीचे आकर कट गया। अब आप ठंडे दिल से सोच सकते हैं कि जिसने पिता का हुक्म माना वह मौत के पंजे से बच गया और जिसने हुक्म नहीं माना वह ट्रेन से कट गया।

इसी तरह गुरु हमारी बेहतरी के लिए हमें रास्ता बताते हैं, गुरु कभी भी हमें नाजायज हुक्म नहीं देते। हम मन–इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, मन के दास हैं इसलिए हमें गुरु का हुक्म नाजायज लगता है। हमें नेक सलाह कौन देगा, हमें भूलों को रास्ते पर कौन लाएगा? वही जो हमारा हमदर्द है। यही हालत हमारे मन की है, **मन ही हमारा दुश्मन है।** सतगुरु हमारा मित्र है। सतगुरु समझाता है लेकिन मन आगे रूकावट पैदा करता है कि मुझे गुरु ने ऐसा क्यों कहा? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भूले सिख गुरु समझाए औजड़ जांदे मार्ग पाए

गुरु हमें बाहर सतसंग के जरिए, बातचीत के जरिए समझाते हैं अगर आप ऐसा करेंगे तो आपका फायदा है। हम उनके बताए उपदेश पर चलकर भजन–सिमरन करते हैं अंदर जाते हैं अगर गुरु अंदर अगुवाई न करे तो हम एक इंच भी आगे नहीं चल सकते। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

अंतर शब्द सुरत धुन जागे सतगुरु झगड़ नबेड़े।

सतगुरु ही बताता है कि बेटा इस रास्ते पर जाना है और उस रास्ते पर नहीं जाना। अंदर काल की बहुत बड़ी–बड़ी ताकतें बैठी हैं जो गुमराह कर देती हैं। आप हिन्दु पुराण पढ़कर देखें मन ने किस–किसको धोखा दिया है। दुर्वासा ऋषि, कृष्ण भगवान का गुरु था उसकी पहुँच स्वर्गों तक थी, वह जब स्वर्गों में गया तो वहाँ अप्सराओं पर मारा गया। मन स्वर्गों तक पहुँचे हुए को नहीं छोड़ता तो जो हम बाहर स्थूल शरीर में बैठकर अहंकार करते हैं गुरु का कहना नहीं मानते तो हम किस तरह इसके दाँव–पेचों और धोखों से बच सकते हैं।

सतगुरु कहे करो तुम सोई। मन के कहे चलो मत कोई।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सतगुरु आपको जो रास्ता बताते हैं उस पर चलें। मन के कहने पर मत चलें, मन के ऊपर भरोसा न करें।''

यह भौ में गोते दिलवावे। सतगुरु से बेमुख करवावे।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''अगर आप मन के कहने पर चलेंगे तो यह आपको गुरु से बेमुख कर देगा, सतसंग में नहीं आने देगा। चौरासी के चक्कर में डाल देगा, चौरासी का चक्कर कभी खत्म नहीं होता। हम मन के कहने पर चलकर और भी बहुत से कष्ट प्राप्त करते हैं।''

काल चक्र में डाल घुमावे। मोह जाल में बहुत फँसावे।।
मित्र न जानो बैरी पूरा। गुरु भक्ति से डारे दूरा।।

आप मन को मित्र न समझें, **मन ही हमारा दुश्मन है।** मन ने बड़ों–बड़ों को धोखा दिया है। मैं बताया करता हूँ कि यह अंदर ही वकील की तरह मित्र बनकर समझाना शुरु कर देता है अगर हम न समझें तो कोई न कोई रोग भी लगा देता है फिर कहता है कि तू भक्ति करता है इसलिए तुझे यह कष्ट आया है। प्यारेयो! इसके पास बहुत से हथियार हैं और बहुत सी सलाह हैं जिसकी वजह से यह हमें गुरु भक्ति से दूर ले जाता है। यह ऐसा मश्करा है कि फिर बता भी देता है कि तू गुरु से दूर चला गया है लेकिन हम वह घाटा किस तरह पूरा कर सकते हैं?

बाबा जयमल सिंह जी कहा करते थे, ''भजन में एक दिन का नागा तीन दिन के बराबर होता है अगर हम एक दिन खाना न खाएं तो शरीर कमजोर हो जाता है, डाँवाडोल हो जाता है। इसी तरह आत्मा को भी खुराक की उतनी ही जरूरत है जितनी हमारे शरीर को है अगर आत्मा को एक दिन खुराक न दें तो आत्मा भी डोलना शुरु कर देती है, आत्मा में कमजोरी आ जाती है। आत्मा की खुराक भजन–सिमरन की कमाई है।''

जो मन आज आपको यह सलाह देता है कि इस बार सतसंग में नहीं जाते अगले रविवार को चले जाएंगे। आज रात बड़ी है थोड़ी देर बाद उठकर अभ्यास कर लेंगे या अभ्यास कल कर लेंगे। प्यारेयो! कल सलाह देने के लिए कोई दूसरी तरफ से तो नहीं आएगा। जिसने आज आपको ऐसी सलाह दी है कल भी वह आपको ऐसी ही सलाह देगा। वही सतसंगी कामयाब होता है जिसे मन ऐसी सलाह दे तो वह एक घंटा और ज्यादा अभ्यास करे फिर मन आपको ऐसी सलाह देने से हट जाएगा। मैं बताया करता हूँ, ''मन के साथ संघर्ष करना ही अभ्यास है।''

दारा सुत सम्पति परिवारा। डारे काम क्रोध की धारा।।

ये औरत है, ये बच्चे हैं, परिवार से बरतना भी जरूरी है अगर हम इस तरफ से बंधन ढीले करते हैं तो यह मन हमें काम, क्रोध की लहरों में फँसा देता है। वैसे तो पाँच किस्म की मजबूत लहरें हमारे अंदर चलती ही रहती हैं लेकिन काम और क्रोध की अग्नि बड़ी जबरदस्त है, जो इंसान को पागल कर देती है। इंसान सोच ही नहीं सकता कि मैं क्या कर रहा हूँ। काम तत्काल का पागलपन होता है बाकी जहरें तो खाने से ही मौत आती है लेकिन काम ऐसी जहर है जो याद करने से ही हमारे दिमाग को चढ़ जाती है और पागलपन पैदा करती है।

इन्द्री भोग बास भरमावे। भक्ति विवेक नाश करवावे।।

मन इन्द्रियों के भोगों में, विषय–विकारों में फँसा देता है हम अपने ख्याल को जितना ज्यादा विषय–विकारों में लगाते हैं हमारे अंदर से उतनी ही ज्यादा विवेक–बुद्धि खत्म हो जाती है। इंसान फैसला ही नहीं कर सकता कि मेरे लिए कौनसा रास्ता ठीक है और कौनसा रास्ता गलत है? इन्द्रियों के भोग भक्ति की जड़ काटकर रख देते हैं।

सतगुरु प्रीतम मिलें न जब तक। कभी न छूटें मन के कौतुक।।

स्वामी जी महाराज अपना तजुर्बा बयान करते हैं कि ऐसा नहीं कि अब तक कोई इनसे बचा ही नहीं। जब तक पूरे सतगुरु नहीं मिलते, हमें नाम के साथ नहीं जोड़ते तब तक हमारे अंदर विवेक बुद्धि पैदा नहीं होती। हम मन के खिलौने बनने से तब ही हटते हैं जब हम सतगुरु के बताए हुए उपदेश पर चलते हैं।

छल बल मन के कहँ लग बरनूं। ऋषि मुनि कोइ जाने न मरमूँ।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं मन के छलों को बयान नहीं कर सकता कि इसके पास कितने छल–फरेब हैं इसने जीवों को बाँधने के लिए कितनी रस्सियाँ बनाई हुई हैं। ऋषि–मुनियों ने घर–बार छोड़ा, बेटे–बेटियाँ छोड़ी, संसार की ऐशों–इशरतें छोड़कर हड्डियों के ढेर हो गए लेकिन उन्हें भी मन का पता नहीं लगा कि मन क्या चीज़ है? मन ने हमारी आत्मा को फँसा रखा है, यह हमें भक्ति से दूर ले जाता है।''

पुराणों में आता है कि श्रंगी ऋषि, ऋषियों का शिरोमणि ऋषि था। उसने घर–बार, ऐशो–इशरतें आराम छोड़े, जंगलों में चला गया खाना नहीं खाया, पेड़ों के पत्ते खाकर गुजारा किया। कपड़ा नहीं पहना तन को गर्मी–सर्दी से नहीं बचाया। उस वक्त के राजा दशरथ ने औरतों को भेजकर ऋषि से यज्ञ करवा लिया। प्यारेयो, इस मन ने किस–किसको धोखा नहीं दिया? मन ने सदा ही धोखा दिया है।

ता ते सतगुरु खोजो निज के। बिन सतगुरु कोइ चले न बच के।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''सबसे पहले पूरे गुरु की खोज करें, उनसे नाम लें, नाम की कमाई करें। गुरु के बिना काल के राज्य से कोई बचकर नहीं गया। ऋषियों–मुनियों की कहानियों से पुराण भरे हुए हैं वे बहुत अच्छे थे। उन्होंने बहुत मेहनत की, उनमें यह कमी थी कि उन्हें पूरा गुरु नहीं मिला, नाम नहीं मिला वे मन के धोखे में आ गए।''

सतगुरु सम प्रीतम नहिं कोई। मन मलीन को धोवें वोही।।

अगर कोई हमारा मित्र, सच्चा हमदर्दी है तो वह हमारा सतगुरु है, जिसने हमें नाम दिया है। हमारे मैले मन को सतगुरु ही धो सकता है उसने धोने के लिए हमें नाम की दवाई दी है। कबीर साहब कहते हैं, ''शिष्य कपड़ा है, गुरु धोबी है और नाम की कमाई से ही हम इसे उजला कर सकते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हम मैले हैं तू ऊजल है। हमारे अंदर कोई गुण नहीं, तू ज्ञाता है, समझदार है, हम बेसमझ हैं।''

प्यारेयो, महात्मा जहाँ पहुँचकर ये लफ्ज़ लिखते हैं, आज हम उस मंजिल पर जाने की प्रैक्टिस कर रहे हैं। हम अंदर जाकर ही गुरु के साथ सच्ची नम्रता, सच्ची आज़ज़ी और सच्चा प्यार कर सकते हैं तभी हमारे अंदर ये गुण आते हैं।

मेरा भाग उदय हुआ भारी। सतगुरु की मैं हुइ अति प्यारी।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''हमारे जन्म–जन्मातंरों के शुभ कर्म होते हैं। मेरे जन्म–जन्मांतरों के सोए हुए भाग्य जागे तभी मैं सतगुरु की प्यारी बनी हूँ। हम कहेंगे शायद! सतगुरु हमारे साथ प्यार नहीं करता, सतगुरु हम सबके साथ प्यार करता है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर हमें यह पता लग जाए कि गुरु हमारे साथ कितना प्यार करता है तो हम खुशी में नाच उठें। गुरु तो प्यार का समुंद्र है उसमें से प्यार की लहरें उठती हैं। अब सवाल हमारा है कि हम उसे कितना नज़दीक और कितना प्यारा समझते हैं।''

मैं भरोसे के साथ यह बात कहता हूँ अगर हम गुरु के साथ प्यार करने लग जाएं तो विषय–विकार हमारे अंदर से पर लगाकर उड़ जाते हैं।

प्यारेयो, अगर बाग में छोटा सा बच्चा बैठा हो तो हम एक नींबू भी नहीं तोड़ सकते कि हमें इंसान का बच्चा देख रहा है। 'शब्द–रूप' सतगुरु

हमेशा हमारे अंदर है, वह शब्द रूप होकर हमारे रोम–रोम में समाया हुआ है। क्या हम बुराई करते हुए सोचते हैं कि हमें सच्चा–सुच्चा इंसान परमात्मा देख रहा है, हम परमात्मा का डर एक बच्चे जितना भी नहीं समझते। हम सोचते हैं कि हम चाहे जो मर्जी करें हमें कौन देख रहा है?

जगत जीव कहा जानें महिमा। वेद कतेब न जानें मरमा।।

दुनिया के जीव गुरु की महिमा क्या बयान कर सकते हैं, वे गुरु की हस्ती को क्या समझ सकते हैं? वेद भी ब्रह्म, त्रिकुटी तक ही बयान करते हैं। बड़े–बड़े चोटी के महात्मा आए, लोगों ने किसी महात्मा को सूली पर चढ़ाया और किसी महात्मा को काँटों का ताज पहनाया। अगर वे यह जानते कि महात्मा तो हमारे ऊपर रहम करने के लिए आए हैं, हमारे साथ सच्चा प्यार करते हैं तो हम उनके साथ इतना बुरा सुलूक न करते।

ज्ञानी जोगी सब थक हारे। सतगुरु महिमा कोइ न विचारे।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''ज्ञानी, किताबी ज्ञान करके थक गए। योगी, योग करके समाधियाँ लगाकर थक गए उन्हें भी गुरु का पता नहीं लगा कि गुरु कहाँ से आता है, गुरु किस हस्ती का मालिक है, गुरु क्या देने के लिए आता है? सारे थककर हार गए लेकिन इस बात को समझ नहीं सके।'' महाराज कृपाल किताबें पढ़ने वालो को दिमागी पहलवान कहा करते थे कि ये सारा दिन दिमागी कुश्ती करते रहते हैं लेकिन इन्हें भी असली नुक्ता नहीं मिला, ये भी गुरु को समझ नहीं सके।

ता ते सतगुरु सरन पुकारूँ। आरत उनकी नित प्रति धारूँ।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''मैं बार–बार गुरु की शरण में जाने के लिए प्रेरित करता हूँ कि जिन्हें गुरु मिल गया, नाम मिल गया उनका इंसानी जामें में आना सफल हो गया। जिन्होंने मिश्री खाई है वही मिश्री का स्वाद बता सकते हैं। जो महात्मा सच्चखंड से आते हैं वही हमें गुरु से मिलने के फायदे और नाम के फायदे बताते हैं।''

प्यारेयो, बादशाहियों का मिलना, अच्छे रूतबे का मिलना, धन–दौलत का मिलना, पति को पत्नी का मिलना और पत्नी को पति मिलना मुश्किल नहीं होता। सुख–दुख हमें हर जन्म में मिलते रहते हैं लेकिन पूरे गुरु का मिलना सबसे मुश्किल है। हमारे ऊँचे भाग्य हों तभी हम पूरे सतगुरु से नामदान प्राप्त कर सकते हैं, पूरे गुरु की आज्ञा का पालन कर सकते हैं। हमारा जन्म–जन्मांतरों का पहले का कर्म हो तभी हम पूरे गुरु के पास जाकर श्रद्धा से 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं। आप कहते हैंः

पूरा गुरु ढूंढ, तेरे भले की कहूँ

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

नानक भाग भले तिस जन के जो हरि चरनी चित्त लावे

आरत करूँ प्रेम से जबही। कुल परिवार तरे मेरा तब ही।।

जब किसी को नाम मिल जाता है तो वह चाहता है कि सारा मुल्क नामलेवा हो जाए, मेरी फैमिली नामलेवा हो जाए और मेरे रिश्तेदार भी नामलेवा हो जाए। जब रिश्तेदार, भाई–बहन नामलेवा हो जाते हैं वह आप तो तरता ही है इस तरह उसका कुटुम्ब और भाई–बहन भी तर जाते हैं।

तजुर्बा बताता है कि पहले–पहले परिवार वाले थोड़ा बहुत झगड़ते हैं अभाव भी लाते हैं और यह भी कहते हैं कि हम जिस रास्ते पर चलते हैं वह ठीक है क्योंकि हर समाज वाले किसी न किसी रास्ते से बँधे होते हैं लेकिन जब सतसंगी प्रेम–प्यार से भजन–सिमरन करता है, अपने जीवन को सुधारता है तो परिवार के लोग धीरे–धीरे उसकी नकल करनी शुरु कर देते हैं, नामलेवा बन जाते हैं।

मेरे पास बहुत से सतसंगियों के माता–पिता अभाव लेकर आए और उन्होंने यह भी कहा कि हम आपको नहीं मानते और जो आपको मानते हैं हम उन्हें भी अच्छा नहीं समझते लेकिन वक्त आने पर थोड़ी देर के बाद

ही देखा गया कि वे लोग नामलेवा बने, अच्छी श्रद्धा भी लाए और फिर उन्होंने यह भी कहा कि अब हम सच्चाई को मानते हैं।

सन्तबानी आश्रम अमेरिका में एक परिवार बहुत श्रद्धा से मुझसे मिलने के लिए आया। उस परिवार के लोगों ने कहा कि हम आपको सिर्फ देखने के लिए ही आए हैं, आपने हमारी लड़की की जिंदगी बनाने के लिए बहुत मेहनत की है। इसी तरह फ्राँस की एक बुजुर्ग माता मुम्बई में मुझसे मिलने के लिए आई उसकी रिश्तेदारी में एक नामलेवा थी। उस बुजुर्ग माता ने धन्यवाद किया और मुझसे कहा कि मैं आपकी शिक्षा पर चलने की कोशिश करती हूँ लेकिन फिलहाल मैं कैथोलिक धर्म को मानती हूँ, मैं आपके लफ्ज़ों की बहुत इज्जत करती हूँ। मैं कोशिश करूँगी कि मैं भी इस मत में आ जाऊँ। जब ऐसे लोग नामलेवा बन जाते हैं तो उस सतसंगी का परिवार और अड़ोस–पड़ोस सब ही तर जाते हैं।

आरत बिधि अब करूँ सिंगारा। राधास्वामी मेरे हुए दयारा।।
राधास्वामी परम दयाल। कर आरत उन हुआ निहाल।।

आरती का मतलब होता है आत्मा का परमात्मा में मिल जाना। मैं गुरु की आरती करती हूँ, आत्मा ने गुरु में मिलना है गुरु परमात्मा में मिला होता है। अब मैं गुरु से मिलकर निहाल हो गई हूँ। गुरु की दया थी कि गुरु ने मुझे अपने गले से लगा लिया और मुझे अपने चरणों में जगह दे दी।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अंधे की ताकत नहीं कि वह सुजाखे को पकड़ ले, जब तक सुजाखा ही दया न करे और आवाज देकर अपनी अंगुली हाथ में न पकड़ा दे।'' परमात्मा हमारे ऊपर दया करके इंसानी चोले में आता है। वह अपना शान्ति का देश छोड़कर हमारे लिए इंसान बना, उसने बिमारियों का खोल धारण किया फिर उसने सतसंग के जरिए अपनी आत्माओं को जगाया। हमारी अंगुली पकड़ना ही उसकी दया है।

वह हमें नाम देता है यह भी उसकी ही दया है नहीं तो हम उस गुरु को पहचान नहीं सकते थे। आत्माएं कहाँ–कहाँ से चलकर आती हैं, किस तरह गुरु ने खींचकर उन्हें अपने पास बुलाया होता है, किस तरह उनके अंदर प्यार का बीज बोया होता है।

यह गुरु की दया है, गुरु की ही बहादुरी है कि उसने हमें बुलाकर अपनी अंगुली पकड़ा दी और हमें हमारे घर का संदेश दिया, ''आओ, मैं आपको आपके घर ले चलूँ।'' हम किस तरह उसका धन्यवाद कर सकते हैं, उसने हमारी खातिर इतने कष्ट सहे होते हैं और वह अपनी अंगुली पकड़ाकर हमें मुफ्त में अपना नाम देता है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

29 अक्टूबर 1986

सन्तों का अभ्यास

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

एक प्रेमी: *पूरे गुरु किस तरह से अभ्यास करते हैं और अब आप किस तरह अभ्यास करते हैं?*

बाबा जी: हाँ भई, बड़ा दिलचस्प सवाल है, हर सतसंगी को गौर से सुनना चाहिए और इस पर अमल भी करना चाहिए बेशक ये महान आत्माएं प्रभु की तरफ से इस संसार में आती हैं। परमात्मा कण–कण में व्यापक है लेकिन परमात्मा जिस पोल पर काम करता है उसकी ड्यूटी है कि किसे किस जगह, कब जगाना है। हर आत्मा का समय मुकर्रर होता है, वह उस समय पर आकर उसे जगा देता है।

इन पर भी माया का पर्दा चढ़ा रहता है लेकिन ये गुमराह नहीं होते। इन्हें बचपन से ही ज्ञान होता है कि हम संसार में किस काम के लिए आए हैं और हमारा क्या मिशन है? बचपन से ही इन्हें गुरु की तलाश रहती है। इनका दिल तड़पता रहता है कि हमें कोई पूरा गुरु मिले, ये सदा अधूरे गुरु से डरते रहते हैं। समय आने पर इनका मिलाप पूरे गुरु से हो जाता है।

बर्तन पहले से ही बना बनाया होता है अगर बर्तन साफ हो तो उसमें वस्तु डालनी आसान हो जाती है। जमीन तैयार हो तो बीज डालना आसान हो जाता है और बड़ी जल्दी वह बीज फल भी दे देता है अगर जमीन तैयार न हो तो समय लग जाता है। बर्तन साफ न हो तो वस्तु डालने वाला पहले उसे जरुर साफ करेगा।

इनमें बचपन से ही कमाल की अंतर्यामता होती है। रिद्धियाँ–सिद्धियाँ शुरु से ही इनके आगे हाथ बाँधकर खड़ी रहती हैं लेकिन ये उन्हें हाथ जोड़कर कहते हैं, 'हमें तुम्हारी कोई जरूरत नहीं।'

बचपन में जब महाराज कृपाल स्कूल में पढ़ते थे तब उन्होंने अपने टीचर से कहा, ''मुझे छुट्टी दे दें मेरी नानी चोला छोड़ने वाली है।'' टीचर ने मजाक समझकर कहा, ''क्लास में जाकर बैठ जा, क्या तू अंतर्यामी है?'' थोड़े समय बाद एक आदमी ने उनके घर से आकर कहा कि पाल को छुट्टी दे दें उसकी नानी उसे याद कर रही है, वह संसार छोड़ने वाली है। उसके बाद वह टीचर सदा ही महाराज कृपाल का आदर करता रहा।

मेरे बचपन की कहानी है जिसे मैंने आज तक किसी को नहीं बताया, उस समय मेरी उम्र आठ साल थी। हमारा पड़ोस मुसलमानों का था, वे लोग नेक आदमी थे। एक दिन सुबह मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि पुलिस अजीज को हथकड़ी लगाकर ले जा रही है। मैं सुबह बाहर निकला और अजीज भी बाहर निकला। अजीज ने मुझसे मजाक किया। मैंने उससे कहा, ''अजीज! आज तुझे पुलिस पकड़कर ले जाएगी।'' उसने पूछा, ''क्या तूने आज स्वपन देखा है? स्वपन तो झूठे होते हैं।''

मैंने उससे कहा, ''मुझे स्वपन का तो पता नहीं लेकिन आज तुझे पुलिसवाले हथकड़ी जरूर लगाएंगे।'' तकरीबन दस बजे पुलिसवालों ने उसे हथकड़ी लगाकर जेल में बंद कर दिया। थोड़े दिनों बाद उसे छोड़ दिया क्योंकि उसका कोई कसूर नहीं था। किसी ने ऐसे ही शक डाल दिया था कि उसके घर में कोई ऐसी–वैसी चीज़ है।

मेरे पिता के घर में काफी सहूलियतें थी, वह अच्छे स्वभाव का अमीर आदमी था। मैं वहाँ आसानी से हर चीज़ प्राप्त कर लेता था। यह मेरे बचपन की बात है कि किसी ने मुझसे पूछा, ''क्या कभी नर्क देखा है?'' मैंने कहा, ''हाँ! हमारे घर में नर्क ही है।'' ऐसी हस्तियों के ऊपर न गरीबी का असर पड़ता है और न ही अमीरी का असर पड़ता है।

महात्मा कहते हैं, ''सुई की नोक से हाथी तो निकल सकता है लेकिन अमीर आदमी मालिक के देश नहीं जा सकता।''

बाबा बिशनदास ने इस गरीब अजायब की जिंदगी की नींव डाली। मुझे अपने घर की जमीन में से जो हिस्सा मिलता और मैं अपनी नौकरी की कमाई भी बाबा बिशनदास जी के चरणों में रख देता था। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि सेवा दे देनी आसान है क्योंकि सेवा लेने वाला धन्यवाद करता है लेकिन बाबा बिशनदास जी का व्यवहार इसके उलट था।

मैं जब ज्यादा पैसे लेकर बाबा बिशनदास जी के पास जाता तब वे मुझे ज्यादा थप्पड़ मारा करते थे। सेवा दे देनी तो आसान होती है लेकिन थप्पड़ खाने मुश्किल होते हैं। ऐसी महान आत्माएं सन्तों पर अभाव नहीं लाती। ऐसी आत्माओं में दृढ़ विश्वास और कमाल की श्रद्धा होती है, वे जानते हैं कि सच्चाई जरुर मिलेगी।

हिन्दुस्तान में पंजाब का इलाका पहले से ही तरक्कीशुदा है क्योंकि पंजाब में नहरें पहले आई थी, पंजाब में काफी सहूलियतें थी। आप आज जहाँ बैठे हैं आपको यहाँ बाग दिख रहे हैं पहले यहाँ बीस–बीस मील तक पानी नहीं मिलता था। आज से तीस–पैंतीस साल पहले जब मैं इस जगह आकर बैठा था उस समय हर आदमी यह सोचकर परेशान था कि पंजाब में इतनी सहूलियतें छोड़कर यह शख्स यहाँ कैसे बैठा है?

बाबा बिशनदास जी ने कहा था कि यह धार्मिक धरती है इसे बीकानेर का इलाका कहते थे। यहाँ कोई जीव का घात नहीं करता था, कोई शराब नहीं पीता था और बकरे–गाय का कत्ल नहीं करता था। यहाँ के लोगों का झुकाव परमात्मा की तरफ था। यहाँ का राजा न्यायकारी था, वह प्रजा को अपने बच्चे समझता था और प्रजा भी राजा को अन्नदाता समझती थी। उस समय किसी के घर में दरवाजा नहीं होता था, राजा का बहुत डर था।

मैं बाबा बिशनदास जी के कहने के मुताबिक ही इस इलाके में आया था। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे कहा था, ''तुझे दात देने वाला यहाँ आएगा।'' यहाँ मुझे बहुत मुश्किलें पेश आई लेकिन मैं यही याद

बनाकर बैठा रहा कि कोई मुझे दूसरी मंजिल से ऊपर का भेद देने वाला, रूहानियत देने वाला यहाँ आएगा। मैंने 'दो शब्द' का भेद लेकर अठारह साल जमीन के नीचे बैठकर अभ्यास किया। मैंने अपनी जिंदगी का एक-एक मिनट कीमती समझा। मैंने अपना समय किसी कारोबार, इन्द्रियों के भोगों या मान-बड़ाई में बर्बाद नहीं किया।

कबीर साहब कहते हैं, ''अगर कोई प्यासा हो तो वह बड़ी इज्जत से, तड़प से पानी पीता है और पिलाने वाले की भी इज्जत करता है कि तूने मेरे प्राण बचाए हैं।''

महाराज सावन सिंह जी मिसाल दिया करते थे, ''तानसेन राग का बादशाह था। जिसने राग विद्या सीखनी है वह तो तानसेन के जूते भी साफ करेगा लेकिन जिसने राग विद्या नहीं सीखनी चाहे तानसेन उसके जूते साफ करे वह फिर भी कहेगा, सोचेंगे।''

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मैंने बाईस साल गुरु की खोज की, मैं हर सभा-सोसाइटी में गया। उस समय हिन्दुस्तान में जो भी महात्मा रूहानियत का काम करते थे मैं सबके पास प्यार-मौहब्बत से गया लेकिन जब मैंने बाबा जयमल सिंह जी का सतसंग सुना तो मेरे बाईस साल के शक-शकूक निकल गए।''

जब मेरी आत्मा के परमात्मा कृपाल मुझे मिले तो मैंने उनसे यह नहीं पूछा कि आप किस जाति से हैं? आपकी शादी हुई है या नहीं? आपके कितने बच्चे हैं और आप कहाँ रहते हैं? मैंने यही सोचा कि जिसकी मुझे खोज थी वह मुझे मिल गया है।

ये सब मिसालें देने का मेरा भाव यह है कि सन्तों में बचपन से ही कमाल की तड़प होती है। वे अपने गुरु के वचनों को कुलमालिक का वचन समझकर ग्रहण करते हैं। यह वक्त के महात्मा की मर्जी होती है कि वह संगत के बीच बिठाकर थ्योरी समझाए या अपनी तवज्जो देकर

सेवक की सुरत को ऊपर ले जाए। ऐसी महान आत्माओं पर कर्मों का बोझ नहीं होता, उनसे अभ्यास इसलिए करवाया जाता है ताकि वे लोगों को डेमोंसट्रेशन दे सके। प्रेमी लोगों के दिल में यह भी बैठ जाए कि इन्होंने इतना अभ्यास किया है और हमें भी अभ्यास करना चाहिए। ऐसी प्योर आत्माएं कम ही मिलती हैं।

अठारह साल 'दो–शब्द' का अभ्यास करने से मेरा अंदर का रास्ता खुला हुआ था। हुजूर ने मुझे थ्योरी समझाने या संगत में बिठाने की जरूरत नहीं समझी। आप दया करके तवज्जो देकर सुरत को ऊपर ले गए और आपने जब तक मुनासिब समझा सुरत को अंदर रखा। उसके बाद आपने कहा कि 16 पी.एस. में जाकर अपना अभ्यास करें। रोज–रोज अभ्यास करने से महारत पैदा होती है।

मुझे बचपन से ही आँखें बंद करके बैठने की आदत थी, मैं जमीन पर कपड़ा बिछाकर बैठता था। जब मेरी सुरत संभली कुछ होश आई तो मैं जमीन के नीचे ही मकान बनाकर बैठा। इस जगह बहुत गर्म लू चलती थी, मकान के बाहर बैठना बहुत मुश्किल था इसलिए हुजूर ने दया करके खुद ही यह मकान बनवाया, मुझे यहाँ बिठाकर मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''अब तू यहाँ बैठकर अभ्यास कर, जब जरूरत होगी, मैं खुद ही तेरे पास आऊँगा।'' वे खुद ही समय–समय पर यहाँ आते रहे।

हुजूर प्रेमियों को नामदान दे रहे थे, उन्होंने प्रेमियों को थ्योरी समझाकर मुझसे कहा, ''इन्हें सिमरन याद करवा दे।'' मैंने उनके आगे विनती की, ''सच्चे पातशाह, कैसी थ्योरी और कैसा सिमरन? मेरी आपके आगे यही अरदास है कि यहाँ जितने आदमी बैठे हैं आप इन्हें अपना वह असली रूप दिखा दें जो आपने मुझे दिखाया था। फिर न भाई का झगड़ा रहे कि शंख बजाने से परमात्मा मिलता है। न सूफी का झगड़ा रहे कि मंत्र पढ़कर पानी पीने से परमात्मा मिलता है। न पंडित का झगड़ा रहे कि माथे पर

सिंदूर लगाने से ही परमात्मा मिलता है। घर–घर में आपका प्यार हो।'' यह सुनकर हुजूर ने मुझसे कहा, ''तू लोगों से मेरे कपड़े न फड़वा।''

जब पूरे महात्मा मिल जाते हैं तो ऐसी महान आत्माएं उनसे भेद लेकर समय बर्बाद नहीं करती। उन्हें गुरु से जो हुक्म मिलता है वे सिर झुकाकर वह करते हैं जो उनके गुरु कह जाते हैं। ऐसी आत्माओं पर बचपन से ही भूख–प्यास का कोई असर नहीं होता अगर वे एक सप्ताह भी अंदर भजन–अभ्यास में बैठ जाएं तो उन्हें भूख–प्यास तंग नहीं करती, उनकी नींद बचपन से ही गायब होती है।

यहाँ सुबह तीन बजे भजन–अभ्यास के लिए घंटी बजती है। जो लोग घर में नियम से तीन बजे भजन–अभ्यास के लिए नहीं उठते यहाँ आकर देखा–देखी भजन पर ज्यादा बैठते हैं तो उनकी सेहत पर बुरा असर पड़ता है। पप्पू यहाँ बैठा है यह बाहर नींद की वजह से ही बीमार होता है।

ननैमो में पप्पू बीमार हो गया, डॉक्टर इसकी देखभाल कर रहे थे लेकिन इसका बुखार नहीं उतरा। मैंने सारे डॉक्टरों को हाथ जोड़कर कहा, ''मैं आपका धन्यवाद करता हूँ, आप चले जाएं मैं इसका इलाज कर लूँगा।'' मैंने पप्पू से कहा, ''चुप करके सो जा, बोलना नहीं।'' जब यह सोकर उठा तो इसका बुखार उतर गया। इसी तरह जब हम पहले टूर से वापिस आ रहे थे तो इसे हवाई जहाज में बुखार हो गया। उस समय गुरभाग सिंह भी हमारे साथ था, वह घबराया कि मैं दवाई लेकर आता हूँ। मैंने कहा, ''दवाई रहने दे, तू कोई खाली सीट देख, यह सो जाएगा तो इसका बुखार उतर जाएगा।'' ऐसा ही हुआ जब यह सोकर उठा तो इसका बुखार उतरा हुआ था। नींद का हमला हर आदमी सहन नहीं कर सकता।

अगर सतसंगी पर काम, नींद और आलस हमला न करें तो भजन करने में मुश्किल नहीं होती। भगवान की यह रीति है कि वह एक बार जिसके लिए अपना दरवाजा खोल देता है फिर उसे बिछोड़ा नहीं देता।

ऐसे महात्मा चाहे खेती करें, चाहे घर का काम करें चाहे संगत का काम करें यह सब परमार्थ में गिना जाता है। ऐसे महात्मा किसी की बुराई करने की बात सोच भी नहीं सकते, वे पवित्र होते हैं और अपनी संगत को भी पवित्र कर लेते हैं। ऐसे महात्मा खुद तरे होते हैं और अपनी संगत को भी तार लेते हैं।

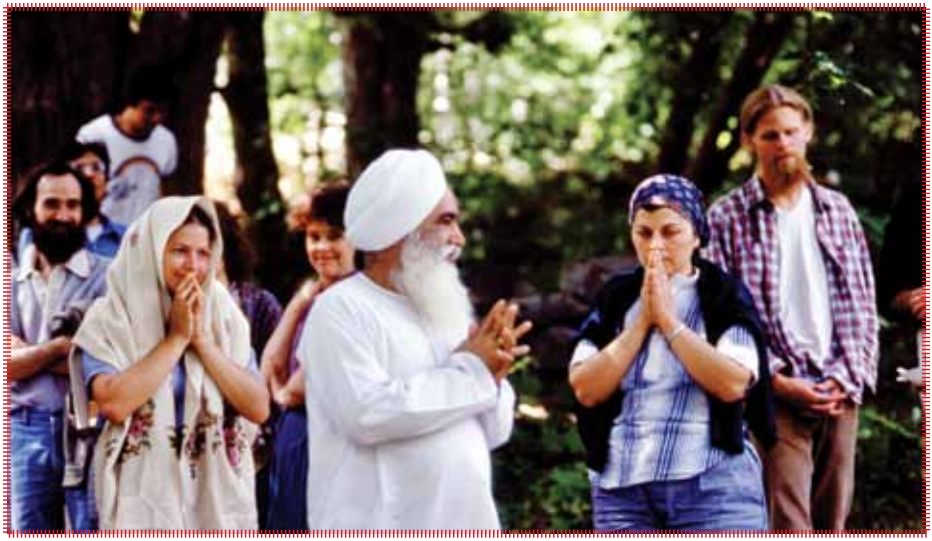

मुझे बहुत से प्रेमियों के साथ इंटरव्यू करने का मौका मिलता है, हर प्रेमी अपना–अपना अनुभव बताता है। कई प्रेमी रूहानियत में दिवालिये होकर आते हैं, परमात्मा कृपाल किसी न किसी तरीके से उन्हें जरूर कुछ देते हैं। कई प्रेमी ऐब छोड़कर जाते हैं, दयालु सतगुरु अपने ऊपर भी बहुत कुछ ले लेते हैं।

आखिर महात्मा अपनी संगत को हर तरीके से पवित्र कर लेते हैं। उनकी कोशिश होती है कि जितनी भी आत्माएं मेरे संपर्क में आई हैं, मुझे याद करती हैं, मैं अपने जीवनकाल में ही इनके अंदर शब्द की धारा पैदा कर दूँ और इन्हें मालिक के आगे खड़ा कर दूँ।

***

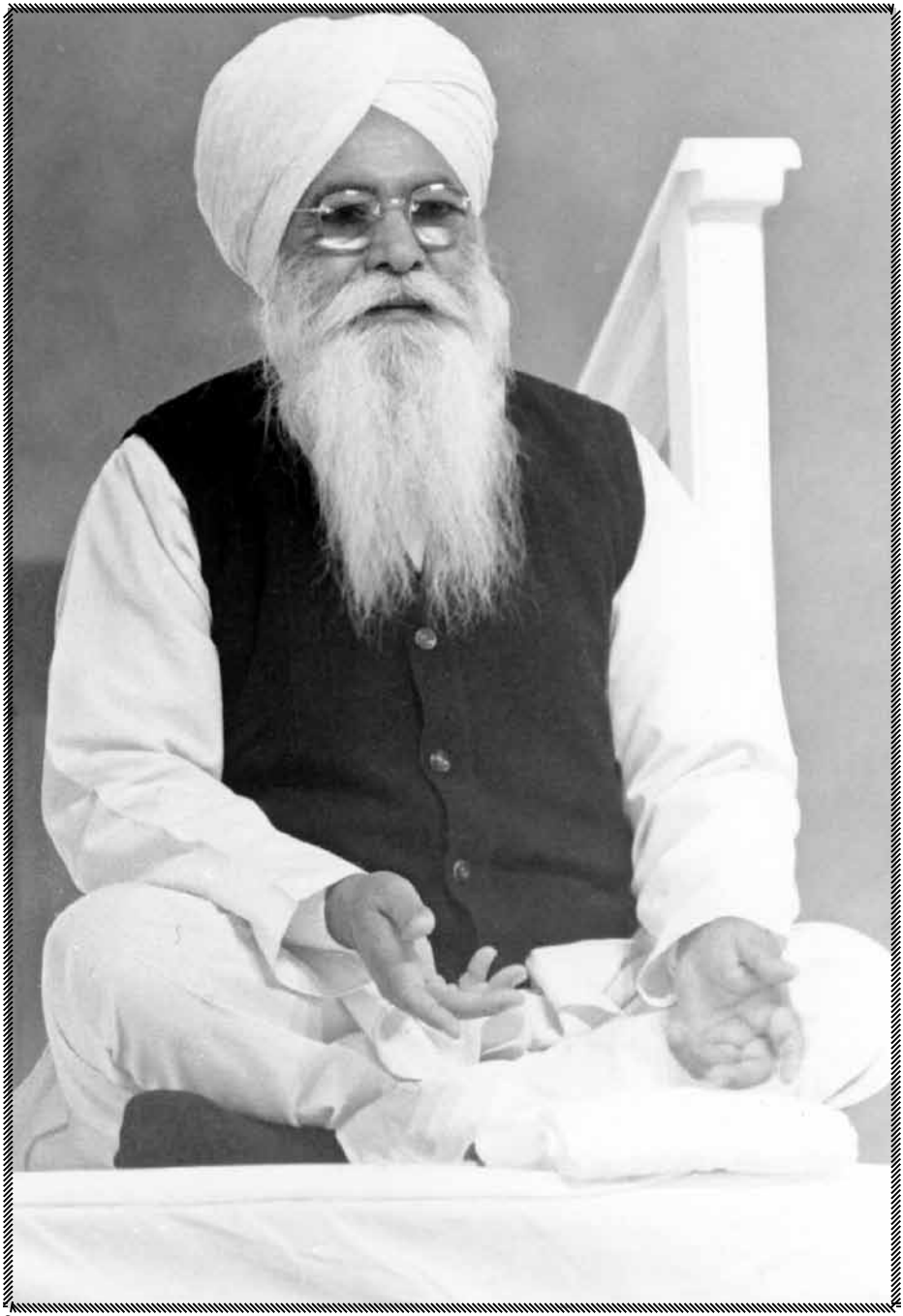

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

14 दिसम्बर 1996

भजन गाने से पहले

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपना यश करने का मौका दिया है। यह उसी परमात्मा कृपाल की दया है जो हम बैठकर भजनों के द्वारा अपना आभार प्रकट कर लेते हैं। प्यारेयो, सतगुरु मान–बड़ाई का भूखा नहीं होता, परमात्मा ने उसे बहुत मान–बड़ाई दी होती है। सतगुरु की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसने अनेक आत्माओं को शान्ति बक्शी होती है। जिसे परमात्मा की तरफ से बड़ाई मिल जाए उसके लिए दुनियावी बड़ाईयाँ तुच्छ होती हैं।

महाराज जी कहा करते थे कि जितनी देर बच्चा सोया है माता अपने काम में मग्न है जब बच्चा रोता है, माता कोई भी कारोबार कर रही हो वह सब कुछ छोड़कर बच्चे को उठाकर उसकी जरूरत को पूरा करती है। इसी तरह हमारा गुरु अपने गुरु के प्यार में मस्त होता है। जब हम सच्चे दिल से अपने गुरु के आगे पुकार करते हैं, तड़प जाहिर करते हैं कि तेरे बिना हमारा कौन सहाई है तो वह हमारी जरूरत को जरूर पूरा करता है।

हाँ भई! जिसे भजन बोलने की परमिशन मिल जाए वह पेज नम्बर जरूर बोले ताकि दूसरे प्रेमियों को शब्द ढूंढना आसान हो जाए।

चलो नीं सईयो, सिरसे नूं चलिऐ,
तांघा सोहणे यार दियां, चलो नीं सईयो सिरसे नूं चलिऐ,
मैत्थों चंगियां जुत्तियां तेरियां, मैं तत्ती दूर पावां फेरियां।

सब प्रेमियों के गाए हुए भजन बहुत मीठे और प्यारे थे, ये भजन महाराज कृपाल ने लिखे थे। उनके लिखे भजन उनके गुरु के लिए संदेश थे, इन भजनों को ताई जी महाराज सावन सिंह जी को सुनाया करती थी।

सच्चे आशिक जिन्हें गुरु के साथ सच्चा प्यार होता है दुनिया उनके साथ कोई कसर नहीं छोड़ती, दुनिया दीवार बनकर गुरु और उनके बीच खड़ी हो जाती है। महाराज कृपाल को अपने गुरु के दरम्यान बहुत दिक्कतें पेश आई। इस बारे में जब हम महाराज कृपाल के मुँह से बातें सुनते थे तो दिल काँपता था कि मालिक कहाँ तक प्यारों का इम्तिहान लेता है।

महाराज सावन सिंह जी के नजदीक के लोग महाराज कृपाल को सावन सिंह जी से मिलने नहीं देते थे। यहाँ तक कि एक प्रेमी ने सावन सिंह जी को महाराज कृपाल के खिलाफ बहुत सारे पत्र लिख दिए। उसने ये सारे पत्र एक ही कलम से लिखकर अलग–अलग डाकखानों से पोस्ट कर दिए। वह सावन अंदर बैठा है, हर किसी को तराजू की तरह तोलता है उसे कौन भरमा सकता है?

महाराज सावन सिंह जी से गर्मी सहन नहीं होती थी, वे गर्मियों में डलहौजी जाया करते थे। डलहौजी में आम संगत को आने का हुक्म नहीं था। प्रेमी उनकी याद में तड़पते थे कि कब महाराज जी डेरे आएं। एक बार उनके वापिस आने का समय हो गया लेकिन उन्होंने अपना प्रोग्राम बदल दिया कि अभी कुछ दिन और रूक कर डेरे जाएंगे।

महाराज कृपाल ने उनको तार भेजी कि वहाँ तो आपकी बसन्त है लेकिन यहाँ हमारा अंत है। जब महाराज सावन सिंह जी को तार मिली तो वे फौरन डेरे आने के लिए तैयार हो गए। महाराज सावन सिंह जी ने महाराज कृपाल से कहा, ''प्यारे कृपाल सिंह, तू इस तरह की तार न भेजा कर, मुझे अभी कुछ दिन और रूकना था लेकिन तार में बहुत कशिश थी, मैं तभी वापिस आने के लिए तैयार हो गया।''

महाराज जी सिरसा में रहते थे। जब आप सिकन्दरपुर अपने फार्म हाऊस में आते थे तब भी संगत को आने का हुक्म नहीं था। वे कहते, ''वहाँ मैं गृहस्थी होता हूँ आप मेरी गृहस्थी में आकर दखल न दें।''

हमारी आर्मी का लेफ्टिनेंट जनरल विक्रम सिंह महाराज सावन सिंह जी का सेवक था, मैं ऑपरेटर था। ऑपरेटर हमेशा ही जनरल के साथ होता है जिस कारण मैं महाराज सावन सिंह जी की ज्यादा संगत कर सका। जिस समय ताई जी ने यह शब्द बोला, उस समय मैं वहीं पर था। मुझे पता नहीं था कि यह शब्द उस महान आत्मा द्वारा लिखा हुआ है जिसने आने वाले वक्त में मेरी आत्मा को शान्ति देनी है, मेरी आत्मा को नाम का अमृत पिलाना है।

आपने इस शब्द में इतनी नम्रता दिखाई है कि मुझसे अच्छी तो तेरी जूतियाँ हैं क्योंकि वह हर समय तेरे साथ रहती हैं। तू हमें तो दूर भी कर देता है लेकिन अपनी जूतियों को दूर नहीं करता अगर हम भी तेरी जूतियाँ बन जाएं तो हमेशा तेरे साथ रहें।

महाराज कृपाल जब मेरे घर आते तो मैं कई बार हँसकर कविता की तुकें बोल लेता। एक बार वे अपनी पगड़ी सँवार रहे थे तो मैंने प्यार में गद्‌गद् होकर यही कहाः

यार कृपाल तू मैनूं शीशा ही बणा लेंदा
मैं होंदा किसे कार दा पर होंदा मेरे यार दा
मैं ओथे ही खड़ोता रहेंदा कंध नाल
जित्थे मैंनू फड़के तू खलियार दा
उठके मैं तेरे नुख्स कढ देंदा, हुण तां तूं गुस्सा मनदा ऐं
जे फेर तू मेरे अग्गे आके खड़दा
मैं कैहंदा तेरी दाढ़ी ऐथों विंगी ऐ, तेरी पग ऐथों विंगी ऐ
तेरे ऐन्ने नुख्स कढदा, तू गुस्सा नी करना सी
हुण जे मैं तैनूं महाराज कह देवां, सच्चे पातशाह कह देवां
ते तूं कान मरोड़ देंदा ऐ

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज के मुखारविंद से

नाई की कहानी

एक बादशाह के सिर पर सींग थे। जो नाई उस बादशाह की हजामत करता था वह बहुत अच्छा था, उस नाई ने किसी को यह बात नहीं बताई। मालिक की मौज वह नाई चोला छोड़ गया। बादशाह को बहुत फिक्र हुआ कि अब मैं जो नाई रखूंगा वह कैसा होगा, कहीं नया नाई मेरा ऐब दुनिया को न बता दे?

राजा ने अकेले में एक नाई को बुलाया, उस नाई का नाम वीर बबरू था। राजा ने वीर बबरू से कहा, ''मैं तुझे बहुत ज्यादा तनख्वाह दूँगा लेकिन तुझे यह मालूम होना चाहिए कि मैंने तुझे अकेले में क्यों बुलाया है?'' वीर बबरू ने सोचा कि मैं ज्यादा हुनरमंद नाई हूँ, अच्छी हजामत करता हूँ इसलिए बादशाह ने मुझे बुलाया है। बादशाह ने उसे सब कुछ समझाकर अपने सिर से टोपी उतारकर दिखाया कि मेरे सिर पर सींग हैं लेकिन तू यह बात किसी से न करना। अगर तूने इस बारे में किसी से बात की तो मैं तुझे और तेरे बच्चों को बहुत कड़ी सजा दूँगा।

अब नाई सजा से डर गया लेकिन उसे यह बात पची नहीं, वह घर आया तो उसका पेट फूल गया। हकीम बुलाए गए, बहुत दवाई–बूटी की लेकिन नाई के पेट का अफारा नहीं हटा। एक अच्छा वैद्य आया जो मानसिक बात को अच्छी तरह समझता था। उस वैद्य ने नाई से पूछा कि आखिर क्या राज़ है? नाई ने वैद्य से कहा, ''तू मेरे पास आ मैं तेरे कान में बताता हूँ।'' जब नाई वैद्य के कान में कहने लगा तो उसे ख्याल आया अगर मैंने इसे बताया तो बादशाह मुझे सजा देगा, नाई चुप हो गया।

वैद्य ने सोचा कि इसे कोई मानसिक परेशानी है अगर यह अपने अंदर की भड़ास बाहर निकाल ले तो अच्छी बात है। वैद्य ने नाई से कहा कि तू अपनी चारपाई उठवाकर जंगल में चला जा, जंगल में जाकर इन लोगों को दूर भेज देना और तुम अपनी बात पेड़ो से कह देना।

नाई का पेट बहुत फूल चुका था उससे चला नहीं जा रहा था। नाई अपनी चारपाई उठवाकर बाहर ले गया। जब चारपाई उठाने वाले दूर चले गए तो नाई ने पेड़ों की तरफ मुँह करके कहा, ''राजा के सिर में दो सींग हैं पर किसी से यह बात मत करना।'' वहाँ ऐक ऐसा पेड़ था जिससे हारमोनियम, तबले वगैरह बनते थे। पेड़ो में वह बात जज्ब हो गई इसलिए हम जो कुछ भी बोलते हैं वह बात खत्म नहीं होती।

कुछ समय बाद वह पेड़ काटा गया। बादशाह के घर लड़का हुआ, बच्चे की खुशी मनाने के लिए बहुत लोगों को बुलाया गया वहाँ रागी भी आए। जब रागी राग करने लगे तो साज यही बोल रहे थे कि राजा के सिर में सींग हैं। फिर सुर बोलने लगे कि राजा के सिर में सींग हैं। जब दूसरी सुर बजाई तो आवाज आई कि कौन कहता है? जब तबला बजाया गया तो वह बोला वीर बबरू, वीर बबरू।

वहाँ बैठी सारी महफिल बहुत परेशान हुई कि इस बात का तो पता ही नहीं लगा कि राजा के सिर में सींग है। राजा समझ गया और उसने अपनी टोपी उतारकर उनके आगे कर दी कि मेरे सिर में सींग हैं, मैंने वीर बबरू से बहुत कहा था कि तू यह बात किसी से मत करना। यही बात हमारे प्रेमियों की है। बुल्लेशाह ने कहा थाः

चुप रहां तां कुछ नहीं बचदा ऐ, सच आखां ते भाँबड़ मचदा ऐ।

बात को छिपाना बहुत मुश्किल होता है। यह तो परम सन्त ही होते हैं जो अपना आप छिपा लेते है।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा गुफा दर्शनों से पहले संदेश

05 जनवरी 1991

रूहानियत

16 पी.एस. आश्रम (राजस्थान)

सन्तमत में कामयाब होने के लिए सतसंगी के दिल में प्यार, भरोसा और श्रद्धा हमेशा बनी रहनी चाहिए। सतसंगी को अपने अंदर सिमरन, भजन और ध्यान कायम रखना चाहिए। पड़ताल करने पर पता लगता है कि हम **रूहानियत** में कितने दिवालियेपन पर आकर खड़े हैं, हम रूहानियत में बिल्कुल कंगाल हैं।

गरीब आदमी किसी अमीर आदमी के आगे इसलिए हाथ फैलाता है क्योंकि वह अपने आपको गरीब समझता है कि यह अमीर आदमी मुझे कुछ देगा, मेरी जरूरत पूरी करेगा। हमारी भी यही हालत है कि जब हम समझते हैं कि हम रूहानियत के दिवालियेपन पर पहुँच चुके हैं तो हम भी उस महान शक्ति के आगे फरियाद करते हैं कि तू हमारी सहायता कर।

आपने इस जगह के बारे में बहुत कुछ सुना है और मैगजीन में भी पढ़ा है। दुनियावी तौर पर यह गुफा सुंदर नहीं, यह जंगल में है। यह जगह उसी तरह है जैसी महाराज कृपाल के वक्त थी। जब इस गरीब आत्मा को समझ आई कि मैं रूहानियत में कंगाल हूँ, कमजोर हूँ तो यह आत्मा दर-दर फिरी लेकिन जब मुझे बाहर से कुछ नहीं मिला तो मैंने अपने आपको असहाय समझकर उसे पुकारना शुरू किया।

परमपिता कृपाल ने छब्बीस साल बड़े प्यार से कहा, ''इंसान का बनना मुश्किल है, भगवान को पाना मुश्किल नहीं, भगवान इंसान की तलाश में फिरता है। देने वाले का क्या कसूर है, सवाल तो लेने वाले का है। जिसने जैसा बर्तन बनाया होता है वह उसे वैसा ही दे जाता है। यह हमारी श्रद्धा, प्यार और भरोसे पर निर्भर करता है। परमात्मा जानता है,

वह पहाड़ की चोटी पर बैठा हुआ सब देख रहा होता है कि आग कहाँ लगी है? उसकी मदद के लिए फौरन आक्सीजन पहुँच जाती है।''

इसी तरह परमात्मा बेखबर नहीं। जब उसे पता लगा कि यह गरीब आत्मा मदद के लिए मुझे पुकार रही है तो वह भी रह नहीं सका। इस जगह की यही महानता है कि जब मुझे बाहर से कुछ नहीं मिला तो उसने यहाँ आकर मुझे रूहानियत का बेशुमार भंडार दिया जो कि बयान से बाहर है। यह भंडार मूल्य से, जोर जबरदस्ती से,भेष धारण करने से नहीं मिलता।

उन्होंने हमें बड़े प्यार से बताया कि आपका सफर पैरों के तलवों से लेकर सिर की चोटी तक है। आपने सिमरन की सहायता से तीसरे तिल तक पहुँचना है। ऊपर का सफर आत्मा 'शब्द' पर सवार होकर तय करती है। हम जब तक सिमरन की सहायता से तीसरे तिल पर नहीं पहुँचते तब तक 'शब्द' हमारी आत्मा को नहीं खींचता बेशक सुनाई देता है। जिस तरह लोहा चुम्बक की रेंज से दूर पड़ा हो तो वह लोहे को नहीं खींचता इसी तरह जब तक आत्मा तीसरे तिल पर नहीं पहुँचती 'शब्द' आत्मा को नहीं खींचता और हम ऊपर का सफर तय नहीं कर सकते।

हम सिमरन की महानता को नहीं समझते। शुरु में हमें थोड़ा संघर्ष करना पड़ता है लेकिन जब रस आने लग जाता है फिर पता लगता है कि सिमरन का क्या फायदा है। यही बात भरोसे की है कि शुरु में हमारा मन दखलंदाजी करता है। हम कभी गुरु को इंसान समझते हैं, कभी उसे कम पढ़ा–लिखा समझते है और कभी उसे बुद्धिमान समझते हैं। इस तरह कभी भरोसा बंध जाता है, कभी हट जाता है।

सेवक के अंदर ऐसा संघर्ष चलता रहता है लेकिन जब थोड़ा संघर्ष करते हैं आखिर एक दिन कामयाब हो जाते हैं। भरोसा बंध जाने के बाद स्वपन में भी नहीं सोचते कि मेरा गुरु इंसान है। वह महान सतपुरुष इंसान के जामें में छिपा हुआ है।

वह 'शब्द–रूप' होकर कण–कण में व्यापक है। जब हम उसे एक बार अंदर देख लेते हैं फिर भरोसा नहीं टूटता।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''वह अपने आप इंसान नहीं बना वह कर्मों की कैद में नहीं होता। प्रभु ने उसे हमारी मदद के लिए संसार में भेजा होता है। वह अपने उन शिष्यों के कल्याण के लिए आता है जिनका फैसला सच्चखंड में हो चुका होता है कि इन्हें अब परेशानी की दुनिया में नहीं भेजना। गुरु का प्यार विषय–विकारों से बचने का सबसे उत्तम साधन है। दुनिया में गुरु जैसा कोई सुंदर नहीं लगता। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

मैं देख देख न रज्जां, गुरु सतगुरु देहा

मैंने सतसंग में पहले भी यह छोटी सी कहानी अर्ज की है। यह कहानी मैंने परमपिता कृपाल से सुनी थी। महाराज सावन सिंह जी का बत्तीस साल का जवान बेटा ओवरसियर लगा हुआ था। महाराज सावन सिंह जी ने उसका अंत समय ब्यास स्टेशन पर ही पूरा करवाया। आप करण–कारण थे। आप कहते हैं कि उस समय मैंने अपना दिल टटोलकर देखा जिसमें न कोई खुशी थी न कोई गमी थी। यह बाबा जयमल सिंह जी की ही दया–मेहर थी कि मैं भाणा मान सका।

आप अपने बेटे को इस वजह से डेरे लेकर नहीं गए कि बीबी रूक्को बाबा जयमल सिंह जी से कहेगी कि आप इस लड़के को जीवित रखें। सन्त कुदरत के उसूलों के मुताबिक ही चलते हैं। सन्त अपने सेवकों से कहते हैं, ''मुसीबत को सहन कर लें कोई करामात न दिखाएं, ऐसा करने से गुरुमुखता में फर्क पड़ता है।''

एक बार महाराज सावन सिंह जी अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी के गाँव सतसंग करने के लिए गए। जैसे ही गाँव की हद आई, आप कार से उतरे और लेटकर उस जगह को दंडवत प्रणाम किया। जब सतसंग करने बैठे तो सतसंग न कर सके, जोर–जोर से रोने लगे। महाराज कृपाल ने

आपसे कहा, ''जब आपकी यह हालत है तो हम जीव क्या कर सकते हैं?'' महाराज सावन सिंह जी ने थोड़ा सा रूककर कहा, ''अगर आज बाबा जयमल सिंह जी मेरी आँखों के सामने आ जाएं तो मैं सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार हूँ।''

सोचकर देखें, जब आपका इतना बड़ा दुनियावी नुकसान हुआ तो आपने उसका कोई दु:ख महसूस नहीं किया लेकिन गुरु के बिछोड़े ने आपको इतना घायल कर दिया।

प्रभु परमात्मा कृपाल ने कई बार इस जगह पर अपने मुबारक चरण रखे हैं। कई प्रेमी जिनका शब्द बंद होता है अगर वे श्रद्धा से इस गुफा के अंदर जाते हैं तो बाद में जब वे मुझसे मिलते हैं तो बताते हैं कि हमारा शब्द चल पड़ा। आप सिमरन करते हुए इस गुफा के अंदर जाएं और सिमरन करते हुए ही बाहर आएं।

मैं आशा करता हूँ कि आप जिस श्रद्धा और प्यार के साथ दस दिन के लिए यहाँ आए हैं और आपको यहाँ से जो प्रेरणा मिली है, आप अपने देश और घरों में जाकर अपनी दुनियावी जिम्मेवारियों को निभाते हुए भजन–सिमरन करके इस प्रेरणा को बनाए रखेंगे।

***

बीमारी बुरे कर्मों के कारण होती है। हमें खुश होना चाहिए कि बीमारी के द्वारा हमारे बुरे कर्म कट रहे हैं। बीमारी बोझ को हल्का करती है और कर्ज चुकाती है।

–परम सन्त सावन सिंह जी महाराज–

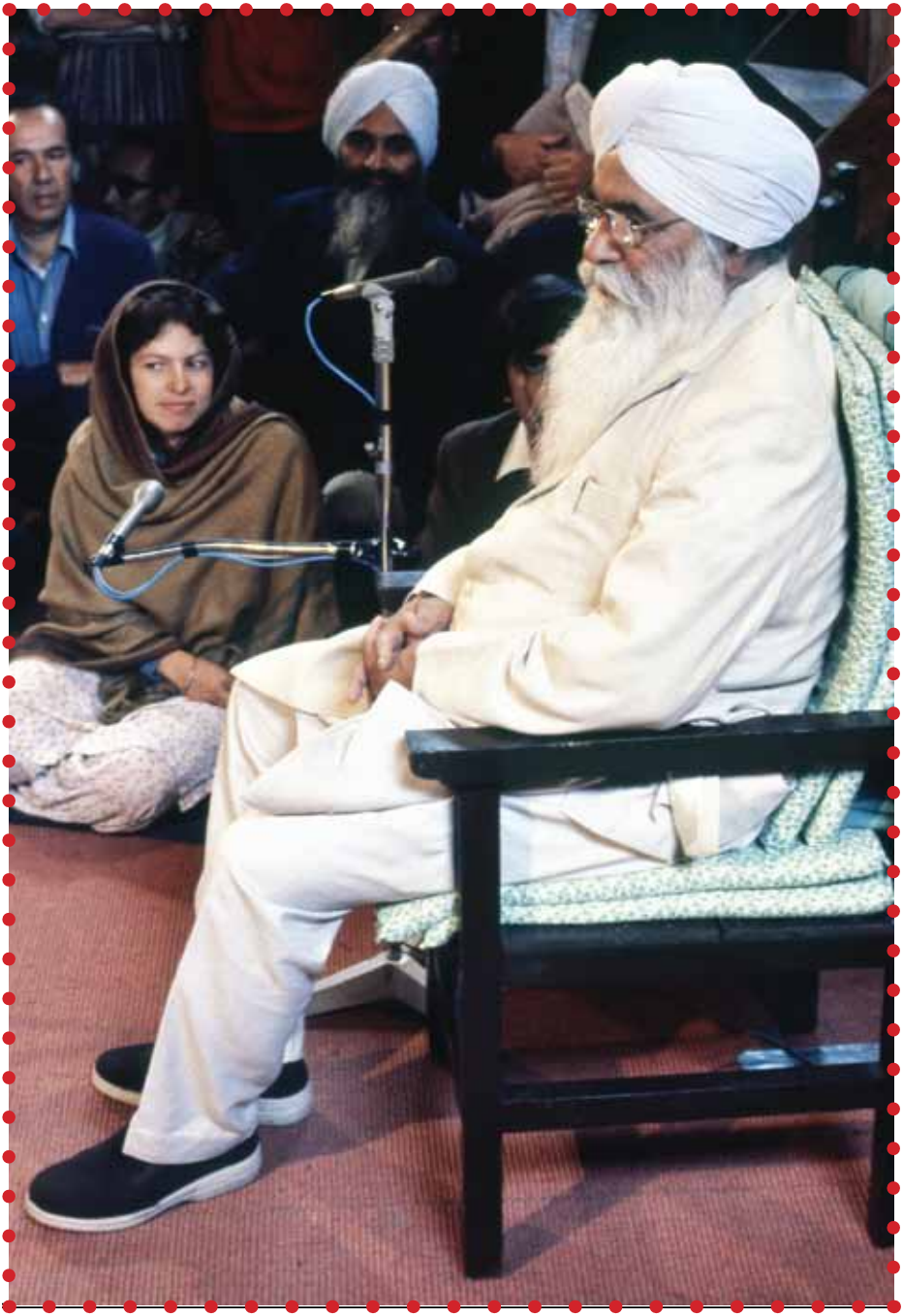

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा विदाई संदेश

17 दिसम्बर 1995

विदाई संदेश

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

हाँ भई, परमात्मा कृपाल ने दया करके हमें यहाँ आठ दिन का जो कार्यक्रम दिया था, वह इस समय समाप्त है। मैं आशा करता हूँ कि प्रेमियों ने जो कुछ भजन–सिमरन, अभ्यास में प्राप्त किया है वह तब ही कायम रह सकता है जब हम घर जाकर इस महारत को कायम रखें और लगातार अभ्यास करते रहें।

मैं आप सबकी वापिसी की निर्विघ्न यात्रा की शुभकामना करता हूँ। परमात्मा कृपाल के आगे यही अरदास करता हूँ कि आप लोग दूर देश से चलकर इस कार्यक्रम में आए हैं। आपने अपने घरों में पहुँचकर आपको जो सांसारिक जिम्मेवारियाँ मिली हैं, उन्हें पूरा करते हुए ज्यादा से ज्यादा भजन–सिमरन करना है और इस मनुष्य जामें का लाभ उठाना है।

प्यारेयो, मैं जब आपको अलविदा कहता हूँ तो भरे मन से ही कहता हूँ क्योंकि मेरा दिल तो नहीं करता कि मैं अपने प्यारे बच्चों को अपने से अलग करूँ लेकिन क्या किया जाए? हम जीव सांसारिक बंधनों में बंधे होते हैं। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''अगर रेशम का कपड़ा कंटीली झाड़ियों में फँस जाए और हम उसे जोर से निकालेंगे तो वह फट जाएगा अगर आहिस्ता–आहिस्ता निकालें तो वह कपड़ा बच जाएगा।''

अगर हम सिमरन के द्वारा अपनी सुरत को आहिस्ता–आहिस्ता शरीर के रोम–रोम में से निकालें तो न गुरु को कोई तकलीफ होती है न शिष्य को कोई तकलीफ होती है। गुरु आपको दुनियावी तौर पर अलविदा कहता है लेकिन अंदर से गुरु कभी भी अपने सेवक को अलविदा नहीं कहता। चाहे संसार पलट जाए अंदर से तो वह अपनी तरफ खींचकर रखता है।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899